श्री सम्मेद शिखर पूजा

दोहा : सिद्धक्षेत्र तीरथ परम, है उत्कृष्ट सु थान।
शिखर सम्मेद सदा नमूं, होय पाप की हान।।१।।
अगिनित मुनि जहंतै गये, लोक शिखर के तीर।
तिनके पद पंकज नमूं, नाशै भवकी पीर।।२।।

अडिल्ल छन्द : हैं उज्ज्वल यह क्षेत्र सु अति निरमल सही।
परम पुनीत सुठौर महागुण की मही।।
सकल सिद्ध दातार, महा रमणीक है।
बन्दू निज सुख हेत, अचल पद देत है।।३।।

सौरठा : शिखर सम्मेद महान, जग में तीर्थ प्रधान है।
महिमा अद्भुत जान, अल्पमती मैं किम कहूँ।।४।

चाल-सुन्दरी छन्द

सरस उन्नत क्षेत्र प्रधान हैं, अति सु उज्ज्वल तीर्थ महान है।
करहिं भक्तिसु जे गुण गायकै, लहहिं सुर शिवके सुख जायके।।५।।

अडिल्ल छन्द : सुर नर हरि इन आदि और वन्दन करै।
भव सागर से तिरैं नहीं भव में परै।।
जन्म जन्म के पाप सकल छिन में टरै।
सुफल होय तिन जन्म शिखर दरशन करै।।६।।

स्थापना : गिरि सम्मेद तैं बीस जिनेश्वर शिव गये।
और असंख्ये मुनि तहां ते सिध भये।।
बन्दू मन वच काय नमूं शिर नायकै।
तिष्ठो श्री महाराज सबै इत आयकै।।१।।

दोहा : श्री सम्मेद शिखर सदा पूजूं मन वच काय।
हरत चतुरगति दुःख को मन वांछित फलदाय।।२।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती श्री बीस तीर्थंकर और असंख्यात मुनि मुक्ति पधारे, तिनके चरणारविन्द की पूजा अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं।
अत्र तिष्ट तिष्ट ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अथाष्टक, गीता छन्द

झारी के जल

सोहन झारी रतन जड़िये मांहि गंगा जल भरो।
जिनराज चरण चढ़ाय भविजन जन्ममृत्यु जराहरो।।
संसार उदधि उबारने को लीजिये सुध भावसों।
सम्मेद गिरपर बीस जिन मुनि पूज हरष उछावसों।।१।।

ॐ ह्रींश्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती बीस तीर्थंकरादि असंख्यात मुनि मुक्ति पधारे,
जन्म-मृत्यु-रोग विनाशनाय जलं ।। १ ।।

चन्दन जल

जाकी सुगन्ध थकी अहो अलि गूंजते आवे घने।
सो मलय संघ घसाय केसर पूज पद जिनवर तने।।
भव आताप निवारने को लीजिये सुध भावसों। सम्मेद.....

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती बीस तीर्थंकरादि असंख्यात मुनि मुक्ति पधारे,
भवआतापविनाशनाय चन्दनं ।। २ ।।

सफेद चावल

अक्षत अखंडित अतिहि सुन्दर जोति शशि सम लीजिये।
शुभ शालि उज्जवल तोय धोय सु पूज प्रभु पद कीजिये।।
पद अक्षय कारण लेय भविजन शुद्ध निरमल भावसों। सम्मेद.....

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती बीस तीर्थंकरादि असंख्यात मुनि मुक्ति पधारे,
अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं ।। ३ ।।

पीले चावल

हे मदन दुष्ट अत्यन्त दुर्जय हते सबके प्रान ही।
ताके निवारण हेत कुसुम मंगाय रंजन घ्रान ही।।
जाकी सुवास निहार षट्पद दौरि आवैं चावसों।। सम्मेद.....

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती बीस तीर्थंकरादि असंख्यात मुनि मुक्ति पधारे,
कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ।। ४ ।।

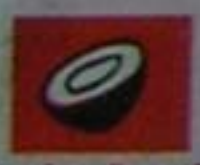
सफेद चिटकी

रस पूर रसना घ्रान रंजन चक्षु प्रिय अति मिष्ट ही।
जिनराज चरण चढाय उत्तम क्षुधा होवै नष्ट ही।।
भरि थाल कंचन विविध व्यंजन लीजिये सुध भावसों। सम्मेद.....

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती बीस तीर्थंकरादि असंख्यात मुनि मुक्ति पधारे,
क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं ।। ५ ।।

पीली चिटकी

त्रैलोक्यगर्भितज्ञान जाको मोह निजवश कर लियो।
अज्ञान तममें पड्यो चेतन चतुरगति भरमन कियो।।
छिनमाहिं मोह विध्वंस होवै आरती कर चावसों। सम्मेद.....

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्र परवत सेती बीसतीर्थंकरादि असंख्यात मुनि मुक्ति पधारे,
मोहान्धकारविनाशनाय दीपं।।६।।

धूप

शुभ अगरु अम्बर वास सुन्दर धूप प्रभु ढिग खेवही।
ए दुष्टकर्म प्रचण्ड तिनको होय तत छिन छेवही।।
सो धूपवसु विधि जरतकारण लीजिये सुध भावसों। सम्मेद.....

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती बीस तीर्थंकरादि असंख्यात मुनि मुक्ति पधारे, अष्टकर्मदहनाय धूपं।।७ ।।

फल

बादाम श्रीफल लौंग पिस्ता लेय शुद्ध सम्हालही।
सैकार दाख अनार केला तुरत टूटे डालही।।
भवि लेय उत्तम हेत शिवके छूट विधि के दावसों। सम्मेद.....

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती बीस तीर्थंकरादि असंख्यात मुनि मुक्ति पधारे, मोक्षफलप्राप्तये फलं।।८।।

अर्घ

जन्म मृत्यु जल हरैं, गन्ध आताप निवारै।
तन्दुल पदके अक्षय मदनं कूं सुमन विदारै।।
क्षुधा हरण नैवेद्य दीप ते ध्वान्त नसावै।
धूप दहै वसु कर्म मोक्ष सुख फल दरसावै।।
ए वसु द्रव्य मिलायकै अर्घ रामचन्द्र कीजिये।
कर पूजा गिरिशिखर की नरभव का फल लीजिये।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्र परवतसेती बीस तीर्थंकरादि असंख्यात मुनि मुक्ति पधारे, अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं।।९ ।।

अर्घ

श्री कूंथुनाथ जी

सकल कर्म हनि मोक्ष, परिवा सित बैशाख ही।
जजों चरण गुण धोख, गये सम्मेदाचल थकी।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती ज्ञानधर कूट के दरशन फल एक कोड़ उपवास और श्री कुंथुनाथ तीर्थंकरादि छानवै कोड़ा कोड़ी छानवे कोड़ बत्तीस लाख छानवे हजार सात सौ बियालीस मुनि मुक्ति पधारे, अर्घ्यं।।१ ।।

श्री धरमनाथ जी

जेठ शुकल चउदस दिवस मोक्ष गये भगवान।
जजौं मोक्ष जिनके चरण कर करि बहुगुणगान।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती सुदत्तवर कूट के दरशन फल एक कोड़ उपवास श्री धरमनाथ तीर्थंकरादि गुणतीस कोड़ा कोड़ी उन्नीस कोड़ नौ लाख नौ हजार सात सौ पंचानवे मुनि मुक्ति पधारे, अर्घं।। २ ।।

श्री सुमतनाथ जी

चैत शुकल एकादशी शिवपुर में प्रभु जाय।
लहि अनन्त सुख थिर भये आतमसूं लवलाय।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती अविचल कूट के दरशन फल एक कोड़ि उपवास और श्री सुमतनाथ तीर्थंकरादि एक कोड़ा कोड़ी चौरासी कोड़ बहत्तर लाख इक्यासी हजार सात सौ मुनि मुक्ति पधारे, अर्घं।। ३ ।।

श्री शान्तिनाथ जी

जेठ शुकल चउदस दिना सकल कर्म क्षय कीन ।
सिद्ध भये सुखमय रहै हुए अष्टगुण लीन।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती शान्तिप्रभ कूट के दरशन फल एक कोड़ उपवास और श्री शान्तिनाथ तीर्थंकरादि नौ कोड़ा कोड़ी नौ लाख नौ हजार नौ सो निन्यानवे मुनि मुक्ति पधारे, अर्घं।। ४।।

श्री विमलनाथ जी

बदि अषाढ़ अष्टमि दिवस मोक्ष गये मुनि ईश।
जजूं भक्तितें विमल प्रभु अर्घ लेय नमि शीश।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती सुवीर कुल कूट के दरशन फल एक कोड़ उपवास और विमलनाथ तीर्थंकरादि सत्तर कोड़ा कोड़ी साठ लाख छः हजार सात सौ बयालीस मुनि मुक्ति पधारे, अर्घं।। ५ ।।

श्री सुपार्श्वनाथ जी

फागन शुकल सप्तमि दिना हनि अघातियाराय।
जगत फांस कूं काटकै मोक्ष गये जिनराय।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती प्रभास कूट के दरशन फल एक कोड़ उपवास और श्री सुपार्श्वनाथ तीर्थंकरादि उनचास कोड़ा कोड़ी चौरासी कोड़ बहत्तर लाख सात हजार सात सौ बयालीस मुनि मुक्ति पधारे, अर्घं।। ६ ।।

श्री अजितनाथ जी

चैत शुकल पंचमि दिना हनि अघातिया राय।
मोक्ष भये सुरपति जजें मैं जजहूं गुण गाय।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती सिद्धवर कूट के दरशन फल बत्तीस कोड़ उपवास और श्री अजितनाथ तीर्थंकरादि एक अरब अस्सी कोड़ चौपन लाख मुनि मुक्ति पधारे, अर्घं।। ७ ।।

श्री पार्श्वनाथ जी

जुगल नाग तारे प्रभु पार्श्वनाथ जिनराय।
सावन शुकल सातें दिवस लहे मुक्ति शिव जाय।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती सुवरनभद्र कूट के दरशन फल सोलह कोड़ उपवास और श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकरादि बयासी करोड़ चौरासी लाख पैंतालीस हजार सात सौ बयालीस मुनि मुक्ति पधारे, अर्घं।। ८ ।।

श्री नेमिनाथ जी

हनि अघाति शिव थान, चतुर्दशी बैशाख बदि।
जजूं मोक्ष कल्यान, गये सम्मेदाचल थकी।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती मित्रधर कूट के दरशन फल एक कोड़ उपवास और श्री नेमिनाथ तीर्थंकरादि नौ सौ कोड़ा कोड़ी एक अरब पैंतालीस लाख सात हजार नौ सौ बयालीस मुनि मुक्ति पधारे, अर्घं।। ९ ।।

श्री अरहनाथ जी

सरंव करम हनि मोक्ष, चैत अमावस शिव गये।
मैं जजहूं वसु धोक, चतुर निकाय सुरा जजैं।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती नाटक नामा कूट के दरशन फल बानवे कोड़ उपवास और श्री अरहनाथ तीर्थंकरादि निन्यानवे कोड़ निन्यानवे लाख निन्यानवे हजार नौ सौ निन्यानवे मुनि मुक्ति पधारे, अर्घं ।। १० ।।

श्री मल्लिनाथ जी

फागुन पंचमि शुकल ही शेष कर्म हनि मोक्ष ।
गए सम्मेदाचल थकी, शिवपद हितगुण धोक।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती संवल कूट के दरशन फल एक कोड़ उपवास और श्री मल्लिनाथ तीर्थंकरादि छानवे कोड़ मुनि मुक्ति पधारे , अर्घं ।। ११ ।।

सोरठा

श्री श्रेयांसनाथ जी

हनि अघाति शिवथान सावन सुदि पूनम गए।
जजूं मोक्ष कल्यान सुरनर खगपति मिलि जजैं।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती संकुल नामा कूट के दरशन फल एक कोड़ उपवास और श्रेयांसनाथ तीर्थंकरादि छानवे कोड़ा कोड़ छानवे कोड़ छानवे लाख नौ हजार पाँच सौ बयालीस मुनि मुक्ति पधारे, अर्घं ।। १२ ।।

श्री पुष्पदन्त जी

गये पुष्प निरवान भादव सुदि अष्टम दिना।
पूजूं मोक्ष कल्यान सब सुर मिल पूजा करी।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती सुप्रभ कूट के दरशन फल एक कोड़ उपवास और श्री पुष्पदन्त तीर्थंकरादि एक कोड़ा कोड़ी निन्यानवे लाख सात हजार चार सौ अस्सी मुनि मुक्ति पधारे, अर्घं ।। १३ ।।

श्री पदमप्रभु जी

हनि अघाति जिनराय, चौथ कृष्ण फागुन विषै।
जजूं चरण गुणगाय, मोक्ष सम्मेदाचल थकी।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती सुप्रभ कूट के दरशन फल एक कोड़ उपवास और श्री पद्मप्रभु तीर्थंकरादि निन्यानवे कोड़ी सत्तासी लाख तितालीस हजार सात सौ सत्ताईस मुनि मुक्ति पधारे, अर्घं ।। १४ ।।

श्री मुनिसुव्रतनाथ जी

हनि अघाति निरवान, फागुन द्वादशि कृष्ण ही।
जजूं मोक्ष कल्यान, गए सुरासुर पद जजों।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती निर्जर नामा कूट के दरशन फल एक कोड़ उपवास और श्री मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकरादि निन्यानवे कोड़ा कोड़ी सत्यानवे कोड़ी नौ लाख नौ सौ निन्यानवे मुनि मुक्ति पधारे, अर्घं ।। १५ ।।

श्री चन्द्रप्रभु जी

शेषकर्म हनि मोक्ष, फागुन शुकल जु सप्तमी।
जजूं गुणनि के धोक, गये सम्मेदाचल थकी।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती ललित कूट के दरशन फल सौलह लाख उपवास और श्री चन्द्रप्रभु तीर्थंकरादि नौ सौ चौरासी अरब बहत्तर कोड़ि अस्सी लाख चौरासी हजार पाँच सौ पचानवे मुनि मुक्ति पधारे, अर्घं।।१६।।

श्री शीतलनाथ जी

गये मोक्ष भगवान, अष्टमि सित आसौज की।
देहु देहु शिवथान, वसुविधि पदपंकज जजूं।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती विद्युतवर कूट के दरशन फल एक कोड़ उपवास और श्री शीतलनाथ तीर्थंकरादि अठारह कोड़ा कोड़ी बयालीस कोड़ बत्तीस लाख बियालीस हजार नौ सौ पाँच मुनि मुक्ति पधारे, अर्घं ।। १७ ।।

श्री अनन्तनाथ जी

दोहा

चैत कृष्ण पूनम दिवस, निज आतम को चीन।
मुक्ति स्थानक जायकैं, हुए अष्ट गुण लीन।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती स्वयंभू कूट के दरशन फल एक कोड़ उपवास और श्री अनन्तनाथ तीर्थंकरादि छानवे कोड़ा कोड़ी सत्तर कोड़ सत्तर लाख सत्तर हजार सात सौ मुनि मुक्ति पधारे, अर्घं ।। १८ ।।

श्री सम्भवनाथ जी

शेष कर्म निरवान चैत शुकल षष्ठमि विषै।
जजों गुणोघ उचार मोक्ष वरांगना पति भये।।१९ ।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती धवल कूट के दरशन फल बयालीस लाख उपवास और श्री सम्भवनाथ तीर्थंकरादि नौ कोड़ा कोड़ी बहत्तर लाख बयालीस हजार पाँच सौ मुनि मुक्ति पधारे, अर्घ ।। १९ ।।

श्री अभिनन्दन नाथ जी

अष्टमि सित बैशाख की गये मोक्ष हनि कर्म।
जजूं चरण उर भक्ति कर देहु देंहु निज धर्म।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती आनन्द कूट के दरशन फल एक लाख उपवास और अभिनन्दन तीर्थंकरादि बहत्तर कोड़ा कोड़ी सत्तर कोड़ सत्तर लाख बयालीस हजार सात सौ मुनि मुक्ति पधारे, अर्घ ।। २० ।।

श्री आदिनाथ जी

माघ असित चउदश विधि सैन, हनि अघाति पाई शिवदैन।
सुर नर खग कैलाश सुथान, पूजैं मैं पूजूं धर ध्यान।।
ऋषभ देव जिन सिध भये , गिर कैलाश से जोय।
मन वच तन कर पूजहूं शिखर नमूं पर सोय।।

ॐ ह्रीं श्री कैलाश सिद्धक्षेत्र परवत सेती माघ सुदी १४ को श्री आदिनाथ तीर्थंकरादि असंख्य मुनि मुक्ति पधारे अर्घ।

श्री वासुपूज्य जी

वासुपूज्य जिनकी छबी अरुन वरन अविकार।
देहु सुमति विनती करूं ध्याऊँ भवदधितार।।
वासुपूज्य जिन सिद्ध भये चम्पापुर से जेह।
मन वचतन कर पूज हूं शिखर सम्मेद यजेह।।

ॐ ह्रीं श्री चम्पापुर सिद्धक्षेत्र परवत सेती भादवा सुदी १४ श्री वासुपूज्य तीर्थंकरादि असंख्य मुनि मुक्ति पधारे, अर्घ।

श्री नेमिनाथ जी

शुकल अषाढ़ सप्तमि दिवस शेष कर्म हनि मोक्ष।
शिव कल्याण सुरपति कियो जजूं चरण गुण धोख।।
नेमिनाथ जिन सिद्ध भये सिद्ध क्षेत्र गिरनार।
मन वच तन कर पूज हूँ भवदधि पार उतार।।

ॐ ह्रीं श्री गिरनार सिद्धक्षेत्र परवत सैती अषाढ़ सुदी सातैं को श्री नेमिनाथ तीर्थंकरादि बहत्तर कोड़ सात सो मुनि मुक्ति पधारे, अर्घ।

श्री वर्धमान जी

कार्तिक वदि मावस गये शेष कर्म हनि मोक्ष।
पावापुरतैं वीर जिन जजूं चरण गुण धोक।।
महावीर जिन सिद्ध भये पावापुर से जोय।
मन वचतन कर पूजहूं शिखर नमूं पद दोय।।

ॐ ह्रीं श्री पावापुर सिद्धक्षेत्र परवत सेती कार्तिक बदी अमावस को श्री वर्द्धमान तीर्थंकरादि असंख्य मुनि मुक्ति पधारे , अर्घ।

सुधर्मादि गणेश गुरु अन्तिम गौतम नाम।
तिन सबकूं लैं अर्घ तैं पूजूं सब गुण धाम।।

ॐ ह्रीं श्री सुधर्मादि गौतम गणधर देव गुणावा ग्राम के उद्यान आदि भिन्न भिन्न स्थानों से निरवाण पधारे, अर्घ।

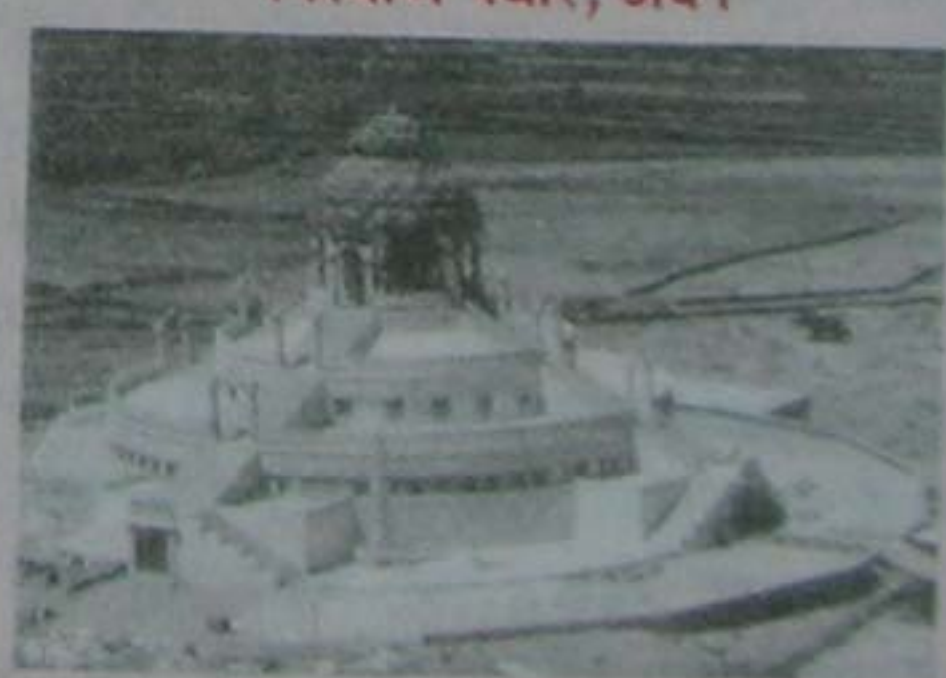

या विधि तीर्थ जिनेश के बन्दू शिखर महान।
और असंख्य मुनीश जे पहुंचे शिव पद थान।
सिद्ध क्षेत्र जे और हैं भरत क्षेत्र के माहिं।
और जे अतिशय क्षेत्र है कहे जिनागम मांहि।।
तिनके नाम सु लेत ही पाप दूर हो जाय।
ते सब पूजूं अर्घ ले भव भव को सुखदाय।।

ॐ ह्रीं श्री भरत क्षेत्र सम्बन्धी सिद्धक्षेत्र और अतिशय क्षेत्रेभ्यों, अर्घ।

दीप अढ़ाई मांहि सिद्ध क्षेत्र जे और है।
पूजूं अर्घ चढ़ाय भव भव के अघ नाश है।

अडिल्ल छन्द

पूजूं तीस चौबीसी महा सुख दाय जू।
भूत भविष्यत् वर्तमान गुण गाय जू।
कहे विदेह के बीस नमूं सिरनाय जू।
और जू अर्घ बनाय सु विघन पलाय जू।

ॐ ह्रीं श्री तीस चौबीसी और भूत भविष्यत् वर्तमान और विदेह क्षेत्र के बीस जिनेश्वर, अर्घ।

कृत्याकृत्यम जे कहे तीन लोक के मांहि।
ते सब पूजूं अर्घ ले हाथ जोर सिरनाय।।

ॐ ह्रीं श्री उर्ध्वालोक मध्यलोक पाताललोक सम्बन्धी जिन मन्दिर जिन चैत्यालयेभ्यो नमः, अर्घ।

तीरथ परम सुहावनों शिखर सम्मेद विशाल।
कहत अल्प बुद्धि युक्ति सै सुखदाई जयमाल।।

जयमाला

जय प्रथम नमुं जिन कुन्थ देव, जय धर्म तनी नित करत सेव।
जब सुमति सुमति सुधबुद्धि देत, जय शांति नमूं नित शांति हेत।।
जय विमल नमूं आनन्द कन्द जय सुपार्श्व नमूं हनि पास कन्द।
जय अजित गये शिव हानि कर्म जय पार्श्व करी जुग उरम सर्म।।
पश्चिम दिस जानूं टोंक एव, वन्दे चहुंगति को होय छेव।
नर सुर पद की तो कौन बात, पूजे अनुक्रमतैं मुक्ति जात।।
जय नेमि तनू नित धरूं ध्यान, जय अरि हर लीनों मुक्ति थान।
जय मल्लि मदन जय शील धार, श्रेयांस गये भव उदधि पार।।
जय सुमति सुमतिदाता महेश, जय पदम नमूं तम हर दिनेश।
जय मुनिसुवृत गुण गण गरिष्ट, जय चन्द्र करै आताप नष्ट।।

जय शीतल जय भव के आताप, जय अनन्त नमू नशि जात पाप।
जय सम्भव भव की हरो पीर, जय अभय करो अभिनन्दन वीर।
पूरब दिश द्वादश कूट जान, पूजत होवत है अशुभ हान।
फिर मूल मन्दिरकूं करूं प्रणाम, पावैं शिव रमनी वेग धाम।।

धत्ता छन्द

श्री सिद्ध सु क्षेत्रं अति सुख देतं तुरतं भव दधि पार करं।
अरि कर्म विनासन शिव सुख कारन जय गिरवर जगता तारं।

चाल छप्पय

प्रथम कुंथ जिन धर्म सुमति अरु शान्ति जिनन्दा।
विमल सुपारस अजित पार्श्व मेटै भव फन्दा।।
श्री नमि अरहजुमल्लि श्रेयांस सुविधि निधि कन्दा।
पद्म प्रभु महाराज और मुनिसुव्रत चन्दा।।
शीतलनाथ अनन्त जिन सम्भव जिन अभिनन्दजी।
बीस टोंक पर बीस जिनेश्वर भाव सहित नित बन्दजी।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती बीस तीर्थंकरादि असंख्यात मुनि मुक्ति पधारे, अर्घं।

कवित्त

शिखर सम्मेदजी के बीस टोंक सब जान।
तासों मोक्ष गये ताकी संख्या सब जानिये।
चउदासै कोड़ा कोड़ी पैसठ ता ऊपर।
जोड़ि छियालीस अरब ताको ध्यान हिये आनिये।
बारा सौ तिहत्तर कोड़ी लाख ग्यारा सो बयालीस।
और सात सो चौतीस सहस बखानिये।।
सैकड़ा हैं सात सो सत्तर एते हुए सिद्ध।
तिनकूं सु नित्य पूज पाप कर्म हानिये।।
बीस टोंक के दरश फल, प्रोषध संख्या जान।
एक सौ तेहत्तर मुनि, गुणसठ लाख महान।।

धत्ता छन्द

ऐ बीस जिनेश्वर नमत सुरेसुर मघवा पूजन कू आवै।
नरनारी ध्यावैं सब सुख पावैं रामचन्द्र नित सिरनावैं।।

इति पुष्पांजलि क्षिपेत्।